National Conference on Innovations in Science, Engineering, Technology and Humanities (NCISETH – 2023)
30TH July, 2023, New Delhi, India

CERTIFICATE NO : NCISETH/2023/C0723544

मध्ययुगीन काल में महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन

SAVITA KUMARI

Research Scholar, Ph. D. in History
P. K. University, Shivpuri, M.P., India

सारांश

मध्ययुगीन काल में महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति जटिल और विरोधाभासी थी। इस काल में महिलाओं को समाज में पारंपरिक रूप से घरेलू भूमिकाओं तक सीमित रखा गया, लेकिन वे विभिन्न क्षेत्रों में भी योगदान देती थीं, जिनका महत्व कम आंका गया। सामाजिक दृष्टि से, महिलाएं मुख्यतः परिवार और समुदाय के भीतर अपनी भूमिका निभाती थीं, जिसमें घर की देखभाल, बच्चों का पालन-पोषण और घरेलू कार्य शामिल थे। हालांकि, ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं कृषि कार्यों में सक्रिय भागीदारी करती थीं, जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार होता था। आर्थिक दृष्टि से, महिलाओं को स्वतंत्र रूप से संपत्ति का अधिकार नहीं था, और उनकी आर्थिक निर्भरता पुरुषों पर अधिक थी। खासकर उच्चवर्गीय महिलाओं को संपत्ति के अधिकार या व्यापारिक गतिविधियों में भागीदारी से वंचित रखा गया था। इसके विपरीत, निचले वर्ग की महिलाएं विभिन्न हस्तशिल्प, घरेलू उद्योगों और बाजारों में कार्यरत थीं, जो उनकी जीविका का साधन था। कुछ महिलाओं ने अपनी क्षमता और प्रतिभा के दम पर साहित्य, कला, और धार्मिक क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई, जैसे कि मीराबाई और संत कवयित्री अक्का महादेवी। हालांकि, महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में कई चुनौतियाँ और सीमाएं थीं, लेकिन उनके योगदान ने मध्ययुगीन समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।